

गणपति संकटनाशनम स्तोत्र अने गणपती अथर्वशीर्ष नुं महत्व

अदिति ऐस. पटवर्धन

रिसर्च स्कोलर, लंडन विश्व विद्यालय, अमदावाद
<https://orcid.org/0009-0008-1164-9231>

सारांश

गणपति संकटनाशनम स्तोत्र अने गणपति अथर्वशीर्ष हिंदू परंपरामां अत्यंत आध्यात्मिक, दार्शनिक अने सांस्कृतिक महत्व धरावे छे. वने गंधो भगवान गणेशने समर्पित छे, जे अवरोधो दूर करनार (विघ्नहर्ता) अने शांति अने सङ्गताना आश्रयदाता तरीके पूजनीय छे. आ पेशर लक्ति, धार्मिक प्रथाओ अने व्यक्तित्थो अने समुदायो पर तेमनी मनोवैज्ञानिक अने आध्यात्मिक असरना संदर्भमां आ शास्त्रोना महत्वनी शोध करे छे. गणपति संकटनाशनम स्तोत्र, ऐक संस्कृत स्तोत्र छे. पडकारोने दूर करवा अने शांति अने समृद्धिने आमंत्रित करवा माटे दैवी हस्तक्षेप मेणववा माटे उच्यारवामां आवे छे. आ स्तोत्रनुं लयबद्ध पठन लक्तोमां आत्मविश्वास जगाडे छे, तणाव ओछे करे छे अने आशा जगाडे छे. गणेश यतुर्थां जेवा तहेवारो दरमियान मुख्य भूमिका लजवे छे अने गणेश उपासको माटे दैनिक प्रार्थनानो सामान्य भाग छे.

गणपति अथर्वशीर्ष, अथर्ववेदो उपाधिषटिक गंध, गणेशने सर्वोच्च वास्तविकता (परब्रह्म) ना मूर्त स्वरूप तरीके रज्ज करे छे. ते गणेशना दार्शनिक पासाओनी शोध करे छे, तेमने सार्वत्रिक ठीज अने येतनाना स्रोत तरीके चित्रित करे छे. लभाए आत्म-अनुभूति अने आध्यात्मिक भावना साथे व्यक्तिगत आत्मानो ऐकता पर भार मुके छे. तेना जपने ऐक गहन आध्यात्मिक अभ्यास गणवामां आवे छे, जे ध्यान अने मानसिक स्पष्टतामां मदद करे छे. आ संशोधन आ गंधोनी सांस्कृतिक अने आधुनिक सुसंगतता पर प्रकाश पाडे छे, जेमां जप अने ध्यान द्वारा मानसिक सुभाकारी पर तेमनी असरनो समावेश थाय छे. ते गणेशना लक्षणो, जेम के शांति, नम्रता अने स्थितिस्थापकताना प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्वनी पण शोध करे छे. तारणो सूचवे छे के आ प्राचीन गंधो मात्र आध्यात्मिक मार्गदर्शन ज प्रदान करे छे अवेनुं नथी, परंतु मानसिक शांति अने सामाजिक संवादिता माटे व्यवहारु उकेलो पण प्रदान करे छे, जे तेमने कालातीत अने सार्वत्रिक रीते महत्वपूर्ण बनावे छे. आ अभ्यास आ गंधोना प्राचीन समजने समकालीन मनोवैज्ञानिक अने दार्शनिक माणभा साथे जोडे छे, जे आधुनिक विश्वमां तेमनी कायमी सुसंगतताने मजबूत बनावे छे.

की वईस: गणपति, संकटनाशनम स्तोत्र, आध्यात्मिक, श्री गणपति अथर्वशीर्ष, गणेश, लक्ति, शक्ति, दुःख, विघ्न

परिचय (INTRODUCTION)

गणपति संकटनाशनम स्तोत्र श्री गणेश ने प्रार्थनाना रूपमां रज्ज करे छे अने जिवननी मुश्किलीओ दूर करवा माटे तेनो पाठ करवामां आवे छे. "संकटनाशनम" शब्द जिवनमां आवेलुं दुःख अने विघ्न नाश करवानी शक्ति दर्शावे छे. गणपती अथर्वशीर्ष ऐ उपाधिषट अथर्ववेद नो भाग छे, जे गणपतिने ब्रह्मानंदनो स्वरूप कहे छे. आ गंधमां गणेशने परम तत्व अने जगतना तमाम तत्वोनी प्रतीक तरीके गणवामां आवे छे.

हिंदू धर्मनी विशाण अने गहन प्रतीकात्मक परंपरामां, भगवान गणेश-जेने विघ्नहर्ता (अवरोधो दूर करनार) अने

बुद्धिप्रदा (शाश्वत आपत्तुं) तरीके पण ओणभवामां आवे छे-दरेक आध्यात्मिक अथवा दृश्यवी साहसनी शरुआतमां बोलववामां आवे छे. तेमने समर्पित घणा हिमनो अने ग्रंथोमां, गणपति संकट नशनम स्तोत्रम अने गणपति अथर्वशीर्षं असाधारण आध्यात्मिक अने धार्मिक महत्व छे.

गणपति संकट नाशनम स्तोत्रम, लक्तिनुं अेक लोकप्रिय स्तोत्र, मुश्केलीओने दूर करवामां अने लक्तोने नुकसानथी बयाववा माटे तेनी असरकारकता माटे पूजवामां आवे छे. सभ्यो द्वारा, भास करीने संकष्टी यतुर्थीना दैवसे भगवान गणेशनी प्रार्थना करवामां आवे छे. तेमनी कविताओ लक्तोने सांसारिक अने आध्यात्मिक दुःखोथी बयाववा माटे तेमनी शक्ति पर भार मूकता गणेशना विविध स्वरूपो दर्शावे छे.

बीजु भाजु, गणपति अथर्वशीर्षं, जेने गणपति उपनिषद तरीके पण ओणभवामां आवे छे, ते अथर्ववेदमांथी लेवामां आवेलुं लेखित गीत छे. आ अेक संपूर्ण ग्रंथ छे, जे भगवान गणेशने परम-ब्राह्मण तरीके ओणभे छे. आध्यात्मिक आंतरदृष्टि अने लक्तिमय उत्साहने समाविष्ट करे छे, जे पुष्टि करे छे के गणेश शाश्वत अने दिव्य बंने छे. विद्वानो आ ग्रंथने मात्र लक्तिनुं स्तोत्र ज नहीं, परंतु अेक दार्शनिक संघि पण माने छे जे वेदानना विचारोने गणपति प्रत्येनी लक्ति साथे जोडे छे.

अेकसाथे, आ वे ग्रंथो गणेश पूजना पूरक परिमाणोनुं प्रतिनिधित्व करे छे: संकट नाशनम स्तोत्रम रक्षण अने लक्तिमय राहत पर भार मूके छे, अने अथर्वशीर्षं आध्यात्मिक अनुभूति अने बिन-द्वैतवादीनी डिलसूडी पर भार मूके छे.

॥ श्री गणपति अथर्वशीर्षं ॥

श्री गणपतिनो पौराणिक उल्लेख :

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

अेनो अर्थ अेम थाय छे के -

आप मोटा शरीरवाणा अने वठेली सुंदवाणा छे अने करोडो सूर्यनुं तेज धरावो छे. हे देव! आप अमारा बधा ज काम हंमेशा निर्विघ्ने पूरा थाय अेवी कृपा करो!

गणेश, गणपति अने गणानन तरीके ओणभाता हिन्दुओना आ प्रमुभ देवता गणपति आदिदेव गणाय छे, जेमणे दरेक युगमां अवतार लीघो होवानुं जणाय छे.

१) सतयुगमां इषि कश्यप अने अदितिने त्यां 'महोत्कत विनायक' रुपे जन्मी, देवान्तक अने नरान्तक नामक राक्षसोनां वधनी कथा छे.

२) त्रेतायुगमां भादरवा मासनी, शुक्लपक्ष यतुर्थीनां 'उमा'ने त्यां "गणेश" रुपे जन्मी, सिंधु नामक राक्षसना वध अने ब्रह्मानी पुत्रीओ सिद्धि अने रिद्धि साथे लज्जनी कथा छे.

३) द्वापरयुगमां 'पार्वती'ने त्यां "गणेश" रुपे जन्मनी कथा तो जाणीती ज छे.

४) कलियुगमां, "भविष्यपुराण" मुजब 'धुमकेतु' के 'धुमवर्षा' रुपे अवतार थवानी कथा मणे छे.

गणेशनी देवता तरीके प्रथम सदीनी आसपास पूजा थवा लागी होवानुं जणाय छे, जो के गुप्त समयगाणामां (छ.स. ४थी सदीमां) ते निश्चित पणे पूजाता होवाना प्रमाणो मणे छे. भारतीय पुराणोमां तेओ शिव अने पार्वतीना पुत्र तरीके उल्लेख पामे छे. परंतु तेओ विश्वनी अनेक प्राचीन संस्कृतियोमां मूण भारतीय परंपराना देवता तरीके प्राप्त थाय छे. भारतनी गणपत्य शाभामां तेओ प्रमुभ देवता तरीके पूजवामां आवे छे. गणेश पुराण, मुदगल पुराण अने श्री गणपति अथर्वशीर्षं तेमनी उपासना माटेना प्रमुभ ग्रंथो छे. ज्यारे अन्य वे पुराणो ब्रह्म पुराण अने ब्रह्मांड पुराणमां पण तेमनो उल्लेख जोवा मणे छे.

आम तो गणेशजीना अनेक नामो मणी आवे छे परंतु तेमना बार नामो प्रचलित छे जे आ मुजब छे.
“ सुमुभ, अेकदंत, कपिल, गजकर्णक, लंबोदर, विकट, विघ्नहर्ता, विनायक, धूमकेतु, गण्ाध्यक्ष, लालचंद्र, गजानन. “

गणेशजीनी पौराणिक माहिती

पिता- लगवान शिव

माता- लगवती पार्वती

भाई- श्री कार्तिकेय

पत्नी- बे १.रिद्धि २. सिद्धि (दक्षिण भारतीय संस्कृतिमां गणेशजी ब्रह्मचारी रूपे दर्शावाय छे.)

पुत्र- बे १. शुभ २. लाल

प्रिय लोग (मिष्ठात्र)- मोदक, लाडु

प्रिय पुष्प- लाल रंगनां

प्रिय वस्तु- दुर्वा (दूब) शमी-पत्र

अधिपति- जल तत्वनां

प्रमुभ अस्त्र- पाश, अंकुश

परम तत्त्व श्री गणेशजी

“उपनिषदनी प्रथम श्लोक गणेशजीने छांदोग्य उपनिषदमां निरूपित ‘तत्वमसि’ अथवा तो परम सिध्दांत तरीके दर्शावे छे. गणेशजी ब्रह्मांडना सर्जक, प्रतिपालक अने विनाशक छे, तेम कह्युं छे. तेओ ज शाश्वत आत्मन (ब्रह्म) छे. आ रीते गणेशजीनी महिमानुं वर्णन करवामां आव्युं छे. तेओने गुणातीत अने कालातीत तरीके वर्णव्या छे. गणेशजीनी तांत्रिक परंपरा साथेनी संबंध नीयेना श्लोकथी मणे छे.

“त्वं मूलाधारस्थितौसि नित्यम्

अर्थात्, तमे सदाय मूलाधार यक पर स्थित छे.

गणेशजीनी बीज मंत्र ‘गं’ आ उपनिषदमांथी प्राप्त थाय छे. आ मंत्रनुं मूण गणेश पुराण छे. आम, गहन साधना माटेना निर्देशो आ लघु उपनिषदमां निर्दिष्ट करवामां आव्या छे. संपूर्ण मंत्रना ऋषि गणक ऋषि अने छंद निश्चुत गायत्री छे; जे आ मुजब छे.

ॐ गं गणपतये नमः

समग्रतः भारतीय प्राचीन वैदिक परंपराना रत्न समान आ उपनिषद सांस्कृतिक अने आध्यात्मिक महत्व धरावे छे. आजे पण बहुजन विशेषमां तेना पठन अने आवर्तननुं बाहुल्य तेनी लोकप्रियता दर्शावे छे. तेमज सामान्य गृहस्थ जीवन जीवता लोकी माटे गहन आध्यात्मिक साधन पण बनी रह्युं छे.”⁵

भारत मां गणेश उपासना :

प्रवर्तमान भारतमां गणेशजी सार्वत्रिक रीते पूजय छे. परंपरागत रीते विघ्नेश्वर तरीके कोर पण शुभ कार्यनी शरुआतमां गणपतिजीनी पूजा करवानुं प्रचलित छे. भारतना लगभग तमाम प्रदेशोमां गणेश उपासना अेक या बीज रीते थती जेवा मणे छे. वीसमी सदीनी शरुआतमां लोकमान्य टिणके महाराष्ट्रमां सार्वजनिक गणेश उत्सवनी शरुआत करी. आम गणपति अे मात्र अंतरंग उपासनानुं केन्द्र न रहेता, बहिरंग समूह येतनानी जागृतिनुं वाहक बन्युं.

गणपति अथर्वशीर्षनी जेम ज अेक सुंदर अने सरण गणपति संकटनाशं स्तोत्र जेनुं रोजेरोज पठण करवाथी आपणा संकटनुं श्री गणेश चोक्कस ज नाश करे छे.

गणपति संकटनाशं स्तोत्रः

જીવનની તમામ પરેશાનીઓને દૂર કરવા માટે ભગવાન ગણેશના શક્તિશાળી સ્ત્રોત તમામ સમસ્યાઓને દૂર કરી શકે છે. ભગવાન ગણેશની પૂજા કર્યા પછી તેમની સ્તુતિ કરતી વખતે તે અવશ્ય વાંચવું જોઈએ. આનો નિયમિત પાઠ કરવાથી ભગવાન ગણેશ તમારા પર વિશેષ આશીર્વાદ આપે છે. આ સ્ત્રોત સિવાય ભગવાન ગણેશની આરતી કરવી અને મોદક ચઢાવવું એ પણ એક મહત્વપૂર્ણ કાર્ય છે.

“प्रणम्य शिरसा देवं गौरी विनायकम् ।
भक्तावासं स्मेर नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ॥1॥

प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंत द्वितीयकम् ।
तृतियं कृष्णपिंगात्क्षं गजववत्रं चतुर्थकम् ॥2॥

लंबोदरं पंचम च पष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेंद्रं धूमवर्णं तथाष्टमम् ॥3॥

नवमं भाल चंद्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजानन् ॥4॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसंघ्यंયઃ પઠેન્નરઃ ।
ન ચ વિઘ્નભયં તસ્ય સર્વસિદ્ધિકરં પ્રભો ॥5॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मो क्षार्थी लभते गतिम् ॥6॥

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभते ।
संवत्सरेण सिद्धिंच लभते नात्र संशयः ॥7॥

अष्टभ्यो ब्राह्मणे भ्यश्च लिखित्वा फलं लभते ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥8॥

॥ इति श्री नारद पुराणे संकष्टनाशनं नाम श्री गणपति स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

દર વર્ષે ભાદરવા સુદ ચતુર્થીના દિવસે વિધિવત રીતે ગણેશ સ્થાપન કરવામાં આવે છે. તેમ વૈદિક મંત્રો અને શાસ્ત્રોક્ત વિધિઓથી તેમની પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવે છે. સમગ્ર ગણેશોત્સવ દરમિયાન આરતી, ધ્યાન, અને પૂજન અર્ચન વડે ગણેશજીની ઉપાસના કરવામાં આવે છે. શ્રી ગણેશ સ્થૂળ સ્વરૂપમાં અન્નમય ચેતનાના દેવતા છે. ગણેશજીની પ્રતિમા અન્નમય ચેતનાનું સુંદર પ્રતિક છે પરંતુ જ્યારે તેમ પ્રાણપ્રતિષ્ઠા કરીએ છીએ ત્યારે અન્નમયમાંથી પ્રાણમય સંચરણ થાય છે. નિરંતર અભિપ્સા, ધ્યાન, ચિંતન મનન દ્વારા પ્રાણમય ચેતના મનોમયમાં સંચારણ પામે છે.

મનોમય ચેતના એક સૂક્ષ્મ ભાગવત ચેતના છે. યોગસાધનામાં એક અવસ્થા એવી આવે છે કે જ્યારે તે ભાગવત ચેતના જીવાત્માનું રૂપ ધારણ કરે છે, જેને વિજ્ઞાનમય કહે છે. ત્યારે તે આ સમસ્ત ચેતનાઓની અંતરાત્મા આનંદમયમા પ્રવેશ કરે છે. આનંદમયમા પ્રવેશ કરતા જ, અન્નમય, પ્રાણમય, મનોમય અને વિજ્ઞાનમય બંધન એક પછી એક કપાતાં જાય છે અને યોગી આનંદના આલોકમાં વિચારવા માડે છે. ગણેશની સ્થાપના સ્થૂળ અર્થાત અન્નમયની સ્થાપના છે, પરંતુ તેનું વિસર્જન બધા કોષોનું વિસર્જન કરી સ્વયં આનંદમય થઈ જવાનો ઉત્સવ છે. ગણેશોત્સવના દશ દીવસનો ક્રમ અન્નમયથી આનંદમય સુધીની યાત્રાનું પ્રતિક છે. આ યાત્રા બહારથી અંદરની બાજુ સ્થૂળ થી સૂક્ષ્મ તરફ છે. અનંત ચતુર્દશીના દિવસે વિસર્જનનો આ અર્થ છે કે આપણે સ્થૂળને છોડીને સૂક્ષ્મ તરફ અનંતમાં પ્રવેશ કરવો.

गणेश पुराण मां गणपति उपासना नुं वर्णन :

“श्री गणेश पुराणमां गणपति उपासनाना भे प्रकारे वर्णव्या छे. तेमानो अेक अेटले वेदांतमां वर्णवेल निराकार शाश्वत ब्रह्म स्वरूप अेवा गणेशज्जुनुं ध्यान अने रहस्य दर्शन. ज्यारे बीजो प्रकार अेटले उपर वर्णवेल साकार स्वरूप गणेशज्जुनी पूजा अने अर्थना. आ बधा विचारोने उपासना भंड के जे गणेश पुराणो प्रथम भाग छे, तेमां वार्ताओ अने ब्रह्मांडनी उत्पत्तिना सिध्दांत स्वरूपे प्रदर्शित थछ छे.”

गणपति उपनिषद अथवा अथर्वशीर्ष :

भगवान गणेशने यश, बुद्धि अने ज्ञानना देवता मानवामां आवे छे. शास्त्रो मुजब गणेशज्जुना घणा बधा मंत्रो तथा स्तोत्रोनुं पठन अने जाप करवा उत्तम छे, परंतु गणपति अथर्वशीर्षनो पाठ अे सर्वोत्कृष्ट अने उत्तम इणदायी गणवामां आव्यो छे. गणपति अथर्वशीर्षना शास्त्रोक्त पध्दतिना पठन थी भगवान गणेश योक्कस प्रसन्न थाय छे.

गणपति अथर्वशीर्ष हिन्दु धर्मनुं अेक गौण उपनिषद छे, जे संस्कृत भाषामां लभायुं छे. आ उपनिषद अथर्ववेद साथे संकणायेलुं गणाय छे. ते बुद्धि अने ज्ञानना देवता श्री गणेशज्जुनी स्तुति छे. तेनो मुभ्य सूर अे छे, शाश्वत सत्य अने ब्रह्म तरीके जे प्रतिष्ठित छे ते ज गणेशज्जु छे. ते गणपति उपनिषद तरीके पण सुविभ्यात छे. तेमां अन्य हिन्दु देवताओ नी जेम गणपतिज्जु ओमकार स्वरूप परम सत्य, ब्रह्म अने सय्येदानंद तरीके वर्णववामां आव्या छे. गणपतिनो उदलेभ प्राचीन ग्रंथ ऋगवेदमां जोवा मणे छे. परंतु अथर्वशीर्ष संभवतः १५ मी अथवा १७ मी सदीमां रथायुं होवानुं मनाय छे. मुक्तिना उपनिषदना १०८ उपनिषदोनी यादीमां ते स्थान पाम्युं छे. ते शैव उपनिषद पैकी नुं अेक गणाय छे.

गणेशज्जुनी आराधना भूब मंगणकारी मानवामां आवे छे. तेमना लक्त विविध प्रकारथी तेमनी आराधना करे छे. अनेक श्लोक, स्तोत्र, जाप द्वारा गणेशज्जुने मनाववामां आवे छे. तेमाथी गणपति अथर्वशीर्षनो पाठ पण भूब मंगणकारी छे दररोज सवारे शुद्ध थछने आ पाठ करवाथी गणेशज्जुनी कृपा अवश्य प्राप्त थाय छे. श्री गणपति अथर्वशीर्ष गणेश उपासनानो महत्वपूर्ण स्रोत छे, जे संस्कृत भाषामां लभवामां आव्यो छे. जेना पठनथी गणपतिनो आशीर्वाद योक्कस ज मणे छे. अथर्वशीर्षना नियमित पठनथी दोषोथी मुक्त थवाय छे अने रोगोथी पण मुक्त थवाय छे. तमारा शुभ कार्यनी शरुआतमां गणपति अथर्वशीर्षनो पाठ करवामां आवे तो करी निर्विघ्न पार पडे छे. गणपति अथर्वशीर्षनो पाठ करती वभते संस्कृत शब्दोनुं उय्यारण अेकदम साथी रीते ज थवुं जोछ्ये, अेना श्लोकोनुं उय्यारण जोटी रीते करवाथी वांचननो योग्य लाभ प्राप्त थतो नथी. अथर्वशीर्ष शांतिपाठथी शरु थाय छे. जे घणा संस्कृत ग्रंथोमां जोवा मणे छे.

अथर्वशीर्ष-मूणपाठ अने अनुवाद :

॥श्री गणपति अथर्वशीर्ष ॥

श्री गणेशज्जुनां अनेक स्तोत्र, प्रार्थनाओ, अष्टोत्तर नामावली जोवा मणे छे. पण ते सर्वे मां मोभरे स्थाने छे. श्री गणपति अथर्वशीर्ष जे ऋषि अथर्वणे रयेलुं छे.

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः ।

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाग्ँसस्तनूभिः ।

व्यशेम देवहितं यदायूः । (यजु -25-21)

(हे देवता, अमे कानथी शुभ सांभणीअे, आंभथी शुभ जोछ्ये, उत्तम अंगोथी तमारां लजन-कीर्तन करतां आ जिंदगी वीते अेवुं करो हे नाथ.)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ।

स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति नस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः ।

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ (यजु -25-19)

(કીર્તિમાન ઇન્દ્ર અમારુ કલ્યાણ કરે, વૈભવશાળી અને જ્ઞાનસંપન્ન પૂષા એટલે સૂર્યદેવ અમારું મંગલ કરે, સુખદાયી પક્ષીરાજ ગરુડજી અમારુ ભલું કરે, વાણીના અધિપતિ દેવ ગુરુ બૃહસ્પતિજી અમારું કલ્યાણ કરે.)

ॐ नमस्ते गणपतये ।

(ॐકાર રૂપી ગણેશજીને મારા પ્રણામ હજો.)

त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि ।

આપજ સાક્ષાત પરમ તત્વ છો.

त्वमेव केवलं कर्ताऽसि ।

આપજ વિશ્વના કર્તા છો .

त्वमेव केवलं धर्ताऽसि ।

આપજ વિશ્વના પાલનહાર છો .

त्वमेव केवलं हर्ताऽसि ।

આપજ વિશ્વના સંહારક છો.

त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि ।

આપજ વિશ્વ વ્યાપક બ્રહ્મ છો.

त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम्

આપજ પ્રત્યક્ષ આત્મા છો...(૧)

ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि

(આ મારી સરળ અને સત્ય વાણી છે.).....(૨)

अव त्वं माम् । अव वक्तारम् ।

(અમારું અને આપના ગુણગાન ગાનારાની રક્ષા કરો.

अव श्रोतारम् । अव दातारम् ।

મહિમા - શ્રવણકાર અને જ્ઞાનદાતાનું રક્ષણ કરો

अव धातारम् । अवानूचानमव शिष्यम् ।

(આશ્રયદાતા અને વેદાભ્યાસીનું રક્ષણ કરો.)

अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् ।

(પશ્ચિમ અને પૂર્વ થી મારુ રક્ષણ કરો.)

अवोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् ।

(ઉત્તર અને દક્ષિણથી મારુ રક્ષણ કરો.)

अव चोर्ध्वात्तात् । अव अधरात्तात् ।

(ઉપરથી અને નીચેથી મારુ રક્ષણ કરો)

सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ।

(ચારેકોરથી મારુ રક્ષણ કરો.....(૩)

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः ।

(આપ જ વેદમૂર્તિરૂપ, આપ જ ચૈતન્ય)

त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः ।

(આપ જ આનંદમય, આપ જ બ્રહ્મમય)

त्वं सच्चिदानन्दाऽद्वितीयोऽसि ।

(आप ज सञ्जीदानं ए अजोऽ.)

त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।

(आप ज साक्षात् सगुण ब्रह्म.)

त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि

(आप ज ज्ञानविज्ञान रूप).....(४)

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते ।

(आ आपयुं विश्व आपनाथी ज उत्तपन्न थयुं छे.)

सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति ।

(आ आपयुं विश्व आपनाथी ज स्थिर छे.)

सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति ।

(आ आपयुं विश्व आपनामां ज समाप्त जाय छे.)

सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति ।

(आ आपयुं विश्व आपनाथी ज अंत आवे छे.)

त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः ।

(आप भूमि-जल-तेज-अग्नि-आकाश छे.)

त्वं चत्वारि वाक् {परिमिता} पदानि ।(आप वाणीनी चार अवस्था छे.)....(५)

त्वं गुणत्रयातीतः ।

(आप ज त्रिगुण /सत्व-रजस-तमसथी पर छे.)

त्वं अवस्थात्रयातीतः ।

(आप त्रय अवस्था/ जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति थी पर छे.)

त्वं देहत्रयातीतः ।

(आप देहथी पर छे.)

त्वं कालत्रयातीतः ।

(आप कालथी पर छे.)

त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् ।

(आप सृष्टिनो मूल आधार/यक छे.)

त्वं शक्तित्रयात्मकः ।

(आप त्रय शक्ति/जन्म-रक्षण-संहरण)रूप छे.)

त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् ।

(आपनुं ध्यान योगीओ नित्य करे छे.)

त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं

(आप सृष्टिकर्ता ब्रह्माञ्च अने सृष्टिपालक विष्णुञ्च छे.)

रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं

(आप रुद्र त्रिभुवनपति इन्द्र अने अग्नि छे.)

वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं

आप वायु, सूर्य अने चंद्र छे.

ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्

(हे ब्रह्म तमेज भू भुवः स्वः लोक ना ॐ स्वरूप छे.)॥६॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम् ।

(गं वार्धनो उच्यार करीने येमां 'अ' स्वर उमेरीने.)

अनुस्वारः परतरः ।अर्धेन्दुलसितम् ।तारेण ऋद्धम् ।

(येने अर्धचंद्राकार अनुनासिकथी शोभित करीने, तार येटले अँकारने समावीये, 'गं' જે પ્રથમ રૂપ)

एतत्तव मनुस्वरूपम्

(गं + अ = ग. 'अ' જે આપનું મધ્ય રૂપ થયું.)

अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् ।बिन्दुरुत्तररूपम् ।

(અનુનાસિક અંત્યરૂપ અને બિન્દુથી થયું ઉત્તર રૂપ . ગં + અ + અનુનાસિક + બિંદુ = ગँ)

नादस्संधानम् ।संगंहिता संधिः ।सैषा गणेशविद्या ।

(મંત્રાક્ષર - ઐ ગં, આમ થયો અંકાર, પૂર્ણ ઉચ્યાર, જે ગણેશ વિદ્યા છે.)

गणक ऋषिः ।निचृद्गायत्रीच्छन्दः ।गणपतिर्देवता ।

(ગણપતિ દેવતાના આ મંત્રણા દ્રષ્ટા છે ગણક ઋષિ અને છંદ છે નિચરુત ગાયત્રી.)

ॐ गं गणपतये नमः

(આવા મંત્રરૂપ શ્રી ગણેશજીને મારા પ્રણામ હજો.)||૭||

*

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।

(આવા એક દાંત અને વક્ર-મુખવાળા ગણેશજીનો મહિમા અમે જાણીએ છીએ.)

तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥८ ॥

(આવા મહિમાશાળી શ્રી ગણેશજી અમને સદબુદ્ધિ અને ભક્તિનું દાન કરો.)

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् ।

(એમને એક જ જમણો દાંત છે, ચાર હાથ છે. જેમાં જમણા હાથમાં વરુણદેવજીનું આયુધ પાશ છે અને ડાબામાં અંકુશ છે.)

रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥

(નીચેના ડાબા હાથમાં ભઝન-દંત છે, જમણો હાથ વરદ-મુદ્રાવાળો છે. ઉંદર એમનું વાહન છે.)

रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् ।

(આવા શ્રી ગણેશજી રતુંબડા છે, મોત પેટવાળા, સૂપડા જેવા કાનવાળા તેમજ લાલરંગના વસ્ત્રો ધારણ કરેલા છે.)

रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैस्सुपूजितम् ॥

(એમના અંગે સુગંધિત રાત દ્રવ્યોનો લેપ કર્યો છે અને લાલ પુષ્પોથી એમની પૂજા થાય છે.)

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् ।

(તેઓ ભક્તો પ્રત્યે દયાળુ છે, આખા યજગતના કારણરૂપ છે અને અવિનાશી છે.)

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ।

(. છતાંયે સૃષ્ટિ ના પહેલા સગુણ રૂપે પ્રગટ થયા છે અને પ્રકૃતિ તેમજ પુરુષથી પર છે.)

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥९ ॥

(આવા શ્રી ગણેશજીનું જે નિત્ય ધ્યાન કરે છે, તે યોગીઓમાં શ્રેષ્ઠ છે.)

नमो व्रातपतये ।नमो गणपतये ।नमः प्रमथपतये ।

(દેવોના/ તપસ્વીઓના/સ્વામીને એને ગણોના અધિપતિને મારા પ્રણામ હજો.)

नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने

(શિવજીના ગણોના અધિપતિ, લંબોદર, એકદંત, સંકટહર્તાને મારાં પ્રણામ હજો.)

शिवसुताय वरदमूर्तये नमः ॥१०॥

(વરદાન દેનારા શિવજીના સુપુત્રને મારા પ્રણામ હજો..) ⁶

निष्कर्ष

गणपति संकटनाशनम स्तोत्र અને ગણપતિ અથર્વશીર્ષ હિંદુ પરંપરામાં ભગવાન ગણેશના ગહન આધ્યાત્મિક, દાર્શનિક અને સાંસ્કૃતિક મહત્વનું ઉદાહરણ આપે છે. આ પવિત્ર ગ્રંથો માત્ર ભક્તિ માટેના સાધન તરીકે જ કામ કરે છે પરંતુ જીવનના પડકારોને પહોંચી વળવા માટે કાલાતીત શાણપણ અને વ્યવહારુ માર્ગદર્શન પણ આપે છે. ગણપતિ સંકટનાશનમ સ્તોત્ર, અવરોધોને દૂર કરવા અને મુશ્કેલીઓ દૂર કરવા પર તેના ભાર સાથે, ભક્તોને આશા અને સશક્તિકરણની ભાવના પ્રદાન કરે છે. તેનું લયબદ્ધ પઠન માનસિક સ્પષ્ટતા અને ભાવનાત્મક સ્થિતિસ્થાપકતાને પ્રોત્સાહન આપે છે, તેને વ્યક્તિગત અને સામૂહિક બંને આધ્યાત્મિક પ્રયાઓ માટે એક શક્તિશાળી માધ્યમ બનાવે છે. ગણપતિ અથર્વશીર્ષ ગણેશની સમજને વૈશ્વિક સ્તરે ઉન્નત કરે છે, તેમને સર્વોચ્ચ ચેતનાના મૂર્ત સ્વરૂપ અને બ્રહ્માંડના એકીકરણ બળ તરીકે રજૂ કરે છે. આ ઉપનિષદિક લખાણ સ્વ અને તેના અનંત સાથેના જોડાણ વિશેના સાર્વત્રિક સત્યોને પ્રકાશિત કરીને ધાર્મિક સીમાઓને પાર કરે છે. તે સ્વ-જાગૃતિ, માઇન્ડકુલનેસ અને આંતરિક શાંતિની શોધને પ્રોત્સાહિત કરે છે, પ્રાચીન શાણપણને સુખાકારી માટેના આધુનિક અભિગમો સાથે સંરેખિત કરે છે. બંને ગ્રંથો હિંદુ ફિલસૂફી અને સંસ્કૃતિની સમૃદ્ધિમાં ફાળો આપે છે, જે ગણેશના લક્ષણોના પ્રતીકવાદ અને વ્યક્તિગત વિકાસમાં તેમની સુસંગતતાની સમજ આપે છે. વધુમાં, તેમના મનોવૈજ્ઞાનિક અને આધ્યાત્મિક લાભો, જેમ કે તણાવ રાહત અને ઉન્નત ધ્યાન, સમકાલીન સમાજમાં તેમના કાયમી મૂલ્યને રેખાંકિત કરે છે. નિષ્કર્ષમાં, ગણપતિ સંકટનાશનમ સ્તોત્ર અને ગણપતિ અથર્વશીર્ષ જીવનના પડકારોને સારી દિશા સૂચન કરવા, આત્મ-સાક્ષાત્કાર પ્રાપ્ત કરવા અને સંવાદિતાને ઉત્તેજન આપવા માટે ગહન માર્ગદર્શક તરીકે સેવા આપે છે. તેમની કાલાતીત ઉપદેશો પ્રાચીન આધ્યાત્મિક પ્રયાઓ અને આધુનિક જીવન વચ્ચેના અંતરને દૂર કરે છે, તેમને જીવનના તમામ પાસાઓમાં શાણપણ, શાંતિ અને સફળતાની શોધ કરનાર વ્યક્તિઓ માટે અમૂલ્ય બનાવે છે.

સંદર્ભ સૂચિ

- [1] કે. પાંગાવકર લક્ષમણાવ. ભક્તિમાર્ગ પ્રદીપ. ૧૮૫૪.
- [2] શુક્લ હરેન્દ્ર. મહર્ષિ વેદવ્યાસ પ્રણિત ગણેશ મહાપુરાણ. શ્રી હરિ પુસ્તકાલય ટાવર રોડ, સુરત . ૨૦૧૦ .
- [3] ડૉ અરુણાબા જાડેજા. શ્રી ગણપતિ અથર્વશીર્ષ સરલ ગુજરાતી. 2014
- [4] Chinmayananda, Swami. Glory of Ganapati: A Commentary on Ganapati Atharvashirsha. Mumbai: Central Chinmaya Mission Trust, 2003.
- [5] Patrick Olivelle (1998), Upanishads. Oxford University Press, ISBN 978-0199540259, see Introduction
- [6] <https://gujarati.indianexpress.com/dharma/ganesh-chaturthi-2024-ganesh-stotram-in-gujarati-if-you-want-to-eliminate-all-danger-from-life-then-start-recitation-of-sankatnashan-ganesh-stotra-ap/311289/>
- [7] <https://archive.org/details/dli.ernet.484703/page/n15/mode/2up>
- [8] <https://archive.org/details/dli.ernet.484703/page/n3/mode/2up?view=theater>